FELICITATIONS TO THE DEPUTY CHAIRMAN

MR. CHAIRMAN: I will now be calling the Leaders of the different parties and groups to offer felicitations. We will start with the Leader of the Opposition.

विपक्ष के नेता (श्री गुलाम नबी आज़ाद): चेयरमैन साहब, सबसे पहले मैं श्री अरुण जेटली जी के स्वस्थ होने के बाद सदन में आने पर इनको बधाई देता हूं। मुझे लगता है। कि आज तो ये वोटिंग के लिए आए हैं, लेकिन अभी इनको कुछ और दिन rest करना चाहिए।

मैं नवनिर्वाचित Deputy Chairman, श्री हरिवंश जी को अपनी तरफ से, अपनी पार्टी की तरफ से और प्रतिपक्ष की तरफ से बहुत-बहुत हार्दिक बधाई देना चाहता हूं। लोकतंत्र में हर पद के लिए इलेक्शन होते हैं, लेकिन जो भी कॉन्स्टीट्यूशनल पोजिशन्स होती हैं, उन पर चुनकर आने के बाद वह नेता, वह लीडर एक पार्टी, एक पक्ष, एक समुदाय का नेता नहीं होता है, बल्कि वह देश का नेता होता है, हर पार्टी का नेता होता है। इसी तरह से आज माननीय हरिवंश जी चुनकर आए हैं। इनके चुनने तक तो इनको एक दल का या कुछ दलों का समर्थन प्राप्त था, लेकिन चुने जाने के बाद ये किसी दल या कुछ दलों के ही डिप्टी चेयरमैन नहीं हैं, बल्कि ये सदन के डिप्टी चेयरमैन हैं। ये जितने उस तरफ के डिप्टी चेयरमैन हैं, उतने ही इस साइड के डिप्टी चेयरमैन हैं। मेरा हमेशा यह मानना है कि चेयरमैन और डिप्टी चेयरमैन का हमेशा विपक्ष की तरफ ज्यादा झुकाव होना चाहिए, क्योंकि सदन में दोतीन किस्म के लोग होते हैं। मैं आपको broader View में बताना चाहता हूं। एक राइट, एक लेफ्ट एंड एक Left-of-Centre होता है। हम अधिकतर देखते हैं कि जो भी चेयर पर बैठता है, उसका राइट की तरफ ज्यादा झुकाव रहता है। मेरा माननीय डिप्टी चेयरमैन साहब से अनुरोध होगा कि वे लेफ्ट और Left-of-Centre की तरफ ज्यादा ध्यान दें, क्योंकि जो सत्ता में है, वह तो सक्षम है ही, उनको ज्यादा nourishment की जरूरत नहीं है, लेकिन जो undernourished होते हैं, underprivileged होते हैं, वे विपक्ष वाले होते हैं, उनको ज्यादा nourishment की जरूरत रहती है। इसके लिए मैं आज के इस समय का फायदा उठाते हुए माननीय चेयरमैन और माननीय डिप्टी चेयरमैन से भी निवेदन करूंगा।

सभापति जी, मुझे बहुत खुशी है कि हरिवंश जी ने हिंदी को विशेष रूप से बढ़ाने के लिए बहुत अच्छा काम किया है। इन्होंने देश और विदेश में हिंदी का जो प्रचार किया है, वह बहुत सराहनीय है। हमारे देश की गौरवशाली भाषा हिंदी है, हम दूसरी भाषाओं का भी उतना ही आदर करते हैं और यही कारण है कि पार्लियामेंट में कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक सभी भाषाओं का प्रयोग होता है, लेकिन जो अधिकतर हिंदी बोलने वालों की संख्या है, उनके लिए हिंदी भाषा को आगे बढ़ाने के लिए हरिवंश जी ने जो काम किया है, उसके लिए मैं उन्हें बहुत बधाई देता हूं। आप जर्नलिस्ट भी हैं और मुझे पूरा विश्वास है कि अगर एक जर्नलिस्ट डिप्टी चेयरमैन बने, तो हमारे कुछ संबंध और जर्नलिस्ट्स के साथ बन जाएं और पार्लियामेंट की ज्यादा कार्यवाही दिखाई जाए। बाकी जो बाहर की न्यूज हैं, उन पर कम ध्यान देकर पार्लियामेंट की कार्यवाही पर ज्यादा दिया जाए। इस काम में इनका जो जर्नलिज्म का अनुभव है, शायद वह भी हमारे काम आ जाए। आपने अलग पदों पर काम किया है। आपने विशेष रूप से भूतपूर्व प्रधान मंत्री, चंद्रशेखर जी के साथ एडिशनल इन्फॉर्मेशन एडवाइज़र के तौर पर काम किया है, अतः हम इसका भी लाभ उठाएंगे। मैं आपको एक दफ़ा फिर से अपनी तरफ से, अपनी पार्टी की तरफ से और पूरे विपक्ष की तरफ से बहुत-बहुत हार्दिक बधाई देना चाहता हूं, धन्यवाद।

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

†**قائد حزب اختلاف (جناب غلام نبی آزاد) :** چیئرمین صاحب، سب سے پہلے میں شری ارون جیٹلی جی کے سوستھ ہونے کے بعد سدن میں آنے پر ان کو بدھائی دیتا ہوں۔ مجھے لگتا ہے کہ آج تو یہ ووٹنگ کے لئے آئے ہیں، لیکن ابھی ان کو کچھ اور دن ریسٹ کرنا چاہئے۔

میں نئے چنے گئے ڈپٹی چیئرمین، شری ہری ونش جی کو اپنی طرف سے، اپنی پارٹی کی طرف سے اور اپوزیشن کی طرف سے بہت بہت ہاردک بدھائی دینا چاہتا ہوں۔ لوک تنتر میں ہر عہدے کے لئے الیکشن ہوتے ہیں، لیکن جو بھی کانسٹی ٹیوشنل پوزیشنس ہوتی ہیں، ان پر چن کر آنے کے بعد وہ نیتا، وہ لیڈر ایک پارٹی، ایک پکش، ایک طبقے کا نیتا نہیں ہوتا ہے، بلکہ وہ دیش کا نیتا ہوتا ہے، ہر پارٹی کا نیتا ہوتا ہے۔ اسی طرح سے آج مانئے ہری ونش جی چن کر آئے ہیں۔ ان کے چننے تک تو ان کو ایک دل یا کچھ دلوں کا سمرتھن حاصل تھا، لیکن چنے جانے کے بعد یہ کسی دل یا کچھ دلوں کے ہی ڈپٹی چیئرمین نہیں ہیں، بلکہ یہ سدن کے ڈپٹی چیئرمین ہیں۔ یہ جتنے اس طرف کے ڈپٹی چیئرمین ہیں، اتنے ہی اس سائڈ کے ڈپٹی چیئرمین ہیں۔ میرا ہمیشہ یہ ماننا ہے کہ چیئرمین اور ڈپٹی چیئرمین کا ہمیشہ وپکش کی طرف زیادہ جھکاؤ ہونا چاہئے، کیوں کہ سدن میں دو ہی قسم کے لوگ ہوتے ہیں۔ میں آپ کو broader view میں بتانا چاہتا ہوں۔ ایک رائٹ، ایک لیفٹ اینڈ ایک Left-of-Centre ہوتا ہے۔ ہم زیادہ تر دیکھتے ہیں کہ جو بھی چیئر پر بیٹھتا ہے، اس کا رائٹ کی طرف زیادہ جھکاؤ رہتا

† Transliteration in Urdu script.

ہے۔ میرا مانئے ڈپٹی چیئرمین صاحب سے انورودھ ہوگا کہ وہ لیفٹ اور Left-of-Centre کی طرف زیادہ دھیان دیں، کیوں کہ جو ستّہ میں ہیں، وہ تو سکشم ہے ہیں، ان کو زیادہ nourishment کی ضرورت نہیں ہے، لیکن جو undernourished ہوتے ہیں، underprivileged ہوتے ہیں، وہ وپکش والے ہوتے ہیں، ان کو زیادہ nourishment کی ضرورت رہتی ہے۔ اس کے لئے میں آج کے اس وقت کا فائدہ اٹھاتے ہوئے مانئے چیئرمین اور مانئے ڈپٹی چیئرمین سے بھی نویدن کروں گا۔

سبھا پتی جی، مجھے بہت خوشی ہے کہ ہری ونش جی نے ہندی کو خاص طور سے بڑھانے کے لئے بہت اچھا کام کیا ہے۔ انہوں نے دیش اور ودیش میں ہندی کا جو پرچار کیا ہے، وہ بہت سراہنئے ہے۔ ہمارے دیش کی گوروشالی بھاشا ہندی ہے، ہم دوسری بھاشاؤں کا بھی اتنا ہی آدر کرتے ہیں اور یہی وجہ ہے کہ پارلیمنٹ میں کشمیر سے لے کر کنیاکماری تک سبھی بھاشاؤں کا استعمال ہوتا ہے، لیکن جو زیادہ تر ہندی بولنے والوں کی تعداد ہے، ان کے لئے ہندی بھاشا کو آگے بڑھانے کے لئے ہری ونش جی نے جو کام کیا ہے، اس کے لئے میں انہیں بہت بدھائی دیتا ہوں۔ آپ جرنلسٹ بھی ہیں اور مجھے پورا وشواس ہے کہ اگر ایک جرنلسٹ ڈپٹی چیئرمین بنے، تو ہمارے کچھ سمبندھ اور جرنلسٹس کے ساتھ بن جائیں اور پارلیمنٹ کی زیادہ کاروائی دکھائی جائے۔ باقی جو باہر کی نیوز ہیں، ان پر کم دھیان دے کر پارلیمنٹ کی کاروائی پر زیادہ دیا جائے۔ اس کام میں ان کا جو جرنلزم کا تجربہ ہے، شاید وہ بھی ہمارے کام آ جائے۔ آپ نے الگ الگ عہدوں پر کام کیا ہے۔ آپ نے خاص طور سے سابق پردھان منتری، چندر شیکھر جی کے ساتھ ایڈیشنل انفارمیشن ایڈوائزر کے طور پر کام کیا ہے، ہم اس کا بھی فائدہ اٹھائیں گے۔ میں آپ کو ایک دفعہ پھر سے اپنی طرف سے، اپنی پارٹی کی طرف سے اور پورے وپکش کی طرف سے بہت بہت ہاردک بدھائی دینا چاہتا ہوں، دھنیواد۔

प्रधान मंत्री (श्री नरेन्द्र मोदी): आदरणीय सभापति जी, सबसे पहले तो मैं सदन की तरफ से और मेरी तरफ से नवनिर्वाचित उपसभापति श्रीमान् हरिवंश को हृदयपूर्वक बहुत-बहुत बधाई देता हूं। हमारे लिए यह खुशी की बात है कि स्वास्थ्य लाभ के बाद हमारे अरुण जेटली जी भी आज हम सबके बीच हैं।

सभापति जी, आज 9 अगस्त है। "अगस्त क्रांति" आज़ादी के आंदोलन से जुड़ी हुई एक महत्वपूर्ण पड़ाव थी। इस पड़ाव में बलिया की बहुत बड़ी भूमिका थी। बलिया 1857 के स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आज़ादी की "अगस्त क्रांति" का बिगुल बजाने में, जीवन न्योछावर करने में अग्रिम पंक्ति में रहा था। मंगल पांडे जी, चित्तू पांडे जी और चन्द्रशेखर जी तक की परंपरा, उसी कड़ी में एक थे – हरिवंश जी। उनका जन्म तो हुआ जयप्रकाश जी के गाँव में और वे आज भी उस गाँव से जुड़े हुए हैं। जयप्रकाश जी के सपनों को साकार करने के लिए जो ट्रस्ट चल रहा है, उसके ट्रस्टी के रूप में भी वे काम कर रहे हैं।

हरिवंश जी उस कलम के धनी हैं, जिसने अपनी एक विशेष पहचान बनाई है। मेरे लिए यह भी खुशी की बात है कि वे बनारस में विद्यार्थी रहे थे। उनकी शिक्षा-दीक्षा बनारस में हुई और वहीं से अर्थशास्त्र में एम.ए. करके वे आए। रिजर्व बैंक ने उनको पसंद किया था, लेकिन उन्होंने रिजर्व बैंक को पसंद नहीं किया। लेकिन बाद में घर की परिस्थितियों के कारण वे नेशनलाइज्ड बैंक में काम करने लगे। सभापति जी, आपको यह जान कर खुशी होगी कि उन्होंने जीवन के बेहद महत्वपूर्ण दो साल हैदराबाद में काम किया था। कभी मुम्बई, कभी हैदराबाद, कभी दिल्ली, कभी कोलकाता, लेकिन यह चकाचौंध, ये बड़े-बड़े शहर हरिवंश जी को नहीं भाए। वे कोलकाता चले गए थे, 'रविवार' साप्ताहिक में काम करने के लिए। हम लोग जानते हैं कि टीवी की दुनिया में एस.पी. सिंह के नाम की एक पहचान बनी थी। उनके साथ उन्होंने काम किया। एक trainee के रूप में, एक पत्रकार के रूप में उन्होंने धर्मवीर भारती जी के साथ काम किया। उन्होंने अपने जीवन की शुरुआत वहाँ से की। उन्होंने 'धर्मयुग' के साथ जुड़ कर काम किया। उन्होंने दिल्ली में चन्द्रशेखर जी के साथ काम किया। वे चन्द्रशेखर जी के चहेते थे। पद की गरिमा और values के सम्बन्ध में इंसान की कुछ विशेषताएँ होती हैं। चन्द्रशेखर जी के साथ वे उस पद पर थे, जहाँ उनको सब जानकारियाँ थीं। चन्द्रशेखर जी इस्तीफा देने वाले थे, यह बात उनको पहले से पता थी। वे स्वयं एक अखबार से जुड़े थे, वे पत्रकारिता की दुनिया से जुड़े थे, लेकिन उन्होंने खुद के अखबार को भी भनक नहीं लगने दी कि चन्द्रशेखर जी इस्तीफा देने वाले हैं। उन्होंने अपने पद की गरिमा को बरकरार रखते हुए उस secret को maintain किया था। अपने अखबार में खबर छप जाए और अखबार की वाहवाही हो जाए, यह उन्होंने होने नहीं दिया था।

बाद में हरिवंश जी 'रविवार' में गए। तब तो संयुक्त बिहार था, बाद में झारखंड बना। वे राँची चले गए। 'प्रभात खबर' के लिए जब उन्होंने join किया, तब उसका circulation सिर्फ 400 का था। जिसके जीवन में इतने अवसर हों, बैंक में जाएँ, तो वहाँ अवसर था, प्रतिभावान व्यक्तित्व था, लेकिन उन्होंने अपने आपको उस 400 circulation वाले अखबार के साथ खपा दिया। चार दशक की पत्रकारिता यात्रा, समर्पित पत्रकारिता यात्रा और वह पत्रकारिता, जो समाज कारण से जुड़ी हुई थी, राज कारण से नहीं। मैं मानता हूँ कि हरिवंश जी के युग का यह सबसे बड़ा योगदान होगा कि वे समाज कारण की पत्रकारिता के पुरोधा रहे और उन्होंने राज कारण वाली पत्रकारिता से अपने आपको बहुत दूर रखा। वे जन आंदोलन के रूप में अखबार को चलाते थे।

परमवीर अल्बर्ट एक्का देश के लिए शहीद हुए थे। एक बार अखबार में खबर आई कि उनकी पत्नी बहुत बेहाल जिन्दगी गुजार रही हैं, यह बीस साल पहले की बात है। हरिवंश जी ने जिम्मा लिया, उन्होंने लोगों से धन इकट्ठा किया और चार लाख रुपए इकट्ठा करके उस शहीद की पत्नी को पहुँचाए। एक बार एक प्रतिष्ठित व्यक्ति को नक्सलाइट्स उठा कर ले गए थे, तो हरिवंश जी, उनके अखबार के जो भी स्रोत थे, उन माध्यमों से हिम्मत के साथ नक्सलाइट-बेल्ट में चले गए, उन लोगों को समझाया-बुझाया और आखिरकार उस व्यक्ति को छुड़ा कर ले आए। इन्होंने अपनी जिंदगी दांव पर लगा दी। एक ऐसा व्यक्तित्व, जिसने किताबें पढ़ीं भी बहुत और लिखीं भी बहुत। मैं समझता हूं कि अखबार चलाना, पत्रकारों से काम लेना तो शायद सरल रहेगा, लेकिन समाज कारण वाली दुनिया का अनुभव एक है और राज कारण वाली दुनिया का अनुभव बिल्कुल दूसरा है। आपने एक सांसद के रूप में सफल कार्यकाल का अनुभव सबको कराया है, लेकिन सदन का हाल यह है, जहां खिलाड़ियों से ज्यादा एम्पायर परेशान रहते हैं, इसलिए नियमों में खेलने के लिए सबको मजबूर करना एक बहुत बड़ा चुनौतीपूर्ण काम है, लेकिन हरिवंश जी इस काम को जरूर पूरा करेंगे।

हरिवंश की श्रीमती जी, आशा जी स्वयं चम्पारण से हैं, यानी एक प्रकार से पूरा परिवार कहीं जे.पी. से तो कहीं गांधी से जुड़ा हुआ है और वे भी M.A. in Political Science हैं, तो उनकी academic knowledge शायद अब आपको ज्यादा मदद करेगी। मुझे विश्वास है कि अब हम सभी सांसदों का एक मंत्र बन जाएगा – 'हरिकृपा', अब सब कुछ 'हरि भरोसे'। मुझे विश्वास है कि हम सभी सांसदों पर, चाहे इधर के हों या उधर के, 'हरि कृपा' बनी रहेगी। यह चुनाव ऐसा था, जिसमें दोनों तरफ 'हरि' थे, लेकिन एक के नाम के आगे बी.के. था – 'बी.के. हरि',*। इधर भी हरि थे, लेकिन नाम के आगे कोई बी.के., वी.के. नहीं था। मैं श्री बी.के. हरिप्रसाद जी को भी बधाई दूंगा, इन्होंने लोकतंत्र की गरिमा के लिए, अपने दायित्वों को निभाया। सब कह रहे थे कि परिणाम हमें पता है, लेकिन प्रक्रिया तो करेंगे। आज इससे काफी नये लोगों की वोट वगैरह डालने की ट्रेनिंग भी हो गई होगी।

मैं सदन के सभी महानुभावों को, सभी आदरणीय सदस्यों को, इस पूरी प्रक्रिया को बहुत उत्तम तरीके से आगे बढ़ाने के लिए धन्यवाद देता हूं और उपसभापति जी को बधाई देता हूं। मुझे विश्वास है कि उनका अनुभव और समाज कारण के प्रति उनका समर्पण यहां बहुत काम आएगा। हरिवंश जी की एक विशेषता यह भी है, उन्होंने अपने

अखबार में एक कॉलम चलाया था, 'हमारा सांसद कैसा होना चाहिए ', लेकिन तब उनको भी पता नहीं था कि एक दिन वे भी एमपी बनेंगे। उन्होंने 'हमारा सांसद कैसा होना चाहिए, इसकी बड़ी मुहिम चलाई थी, तो मैं समझता हूं कि उनके वे जो सपने थे, आज उनको पूरा करने का एक बड़ा अवसर उन्हें मिला है। हम सभी सांसदों को भी वह ट्रेनिंग आपके माध्यम से मिलेगी। जिन दशरथ मांझी की चर्चा हिन्दुस्तान में कभी-कभी सुनाई देती है, बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि उन दशरथ मांझी की कथा को ढूंढ-ढाँढ़ कर पहली बार किसी ने प्रकट किया था, वह हरिवंश बाबू ने किया था। यानी समाज के बिल्कुल नीचे के स्तर के लोगों से जुड़े हुए महानुभाव, आज से हम लोगों का मार्गदर्शन करने वाले हैं, इसके लिए मेरी तरफ से उनको बहुत-बहुत बधाई, बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

---

* Expunged as ordered by the Chair.

12.00 Noon

MR. CHAIRMAN: The Leader of the House, Shri Arun Jaitley.

सभा के नेता (श्री अरुण जेटली): माननीय सभापति जी, मैं अपनी ओर से और सभी माननीय सदस्यों की ओर से श्री हरिवंश जी का अभिनंदन करता हूं। आज एक लोकतांत्रिक प्रकिया के माध्यम से इस सदन ने उनमें उपसभापति होने का विश्वास प्रकट किया है। हम लोगों को पिछले कई वर्षों से, एक सांसद के रूप में हरिवंश जी को देखने का अवसर मिला। उनकी अपनी बैकग्राउंड जो रही, वे लेखक रहे, संपादक रहे, बैंकर रहे, राजनैतिक कार्यकर्ता रहे और उस सारे ज्ञान का उपयोग करके वे जब भी इस सदन में बोले हैं, तो पूर्ण तैयारी के साथ बोले हैं। आरम्भ के वर्षों में, जब वे पीछे बैठते थे, तब भी वे जिस किसी भी विषय पर बोलते थे, हर विषय पर उनकी पूरी रिसर्च होती थी। उनकी गरिमा, बात कहने की शालीनता, किसी पर व्यक्तिगत प्रहार न करना, कभी सदन की प्रोसीडिंग्स को डिस्टर्ब न करना, ये सब चीजें उनके बारे में हम लोग देखते रहे हैं।

मुझे लगता है कि जो व्यक्ति जो इन मापदंडों के हिसाब से चलता रहा है, निश्चित रूप से वह इस सदन की गरिमा, उपसभापति के रूप में, और बढ़ाएगा। आज़ाद साहब ने कहा कि उस तरफ थोड़ी कृपा ज्यादा बनाए रखें। जिन्होंने भी इस सदन की परम्पराएं बनाई हैं, उन्होंने सोचा होगा कि उपसभापति को समर्थन ज्यादा यहां से मिलता है लेकिन सीट उन्हें वहां दी गई। शायद इसका कारण यह है कि बैठते आप आज़ाद साहब की बगल में हैं लेकिन देखते हमारी तरफ हैं। ये दोनों काम तब पूरे हो जाएंगे, जब आप दोनों के बीच संतुलन बनाकर चलेंगे कि सरकारी कामकाज की कहां आवश्यकता है जो देश के लिए बहुत जरूरी है। विपक्ष का अधिकार है कि वह सदन में जनहित के मुद्दे उठाए। देश और समाज के लिए जो भी आवश्यक है, उसमें आप संतुलन बनाए रखेंगे तथा इसमें अधिक से अधिक लोगों को, विशेषकर जो सदन में बैकबैंचर्स हैं, कई बार उनकी तरफ से शिकायत की जाती है कि हमें सदन में बोलने का अवसर कम मिलता है, उन सबका ध्यान रखते हुए, मुझे पूरा विश्वास है कि आप इस पद की गरिमा को और बढ़ाएंगे, सदन की कार्यवाही बहुत बेहतर तरीके से चलाएंगे और जो public discourse है, जिसका स्तर ऊपर करने की पूरे देश के सामने चुनौती है, उसका एक उदाहरण आप स्वयं देते थे, इस दिशा में पूरा प्रयास करेंगे। मुझे विश्वास है कि इसमें आप सफल होंगे और public discourse का स्तर भी इस देश में काफी ऊपर हो जाएगा, धन्यवाद।

प्रो. राम गोपाल यादव (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं आज के अवसर पर नव-निर्वाचित उपसभापति, आदरणीय हरिवंश जी को अपनी तरफ से तथा अपने दल की तरफ से बधाई देता हूं। जैसा यहां Leader of the Opposition और माननीय प्रधान मंत्री जी ने बताया, हरिवंश जी से हम सब लोगों की बहुत पुरानी जानकारी है, संबंध है। आप बहुत ही विनम्र स्वभाव के हैं। इस चुनाव में अच्छी बात यह रही कि दोनों उम्मीदवार अच्छे थे। जब चुनाव हुआ, यहां किसी तरह की कटुता नज़र नहीं आई। कहीं ऐसा नहीं लगा कि यहां चुनाव हो रहा है, कहीं खींचतान हो रही है या ऐसा कुछ हो रहा है। बड़ी शालीनता के साथ चुनाव सम्पन्न हुआ। यह इसका भी असर था कि दोनों उम्मीदवार बहुत परिपक्व थे, संतुलित किस्म के थे।

मैं यहां सिर्फ एक चीज़ कहना चाहूंगा। जैसा प्रधान मंत्री जी ने कहा कि अम्पायर को यहां

बहुत परेशानी होती है, वह सही बात है। कई बार political parties के लोगों की, मेम्बरान की मजबूरी होती है और उन्हें कुछ मामले यहां उठाने पड़ते हैं। उसका मतलब यह कभी न समझा जाए कि वे चेयर की भावनाओं को ठेस पहुंचाने का काम deliberately कर रहे हैं। माननीय सदस्य जिस राज्य से आते हैं, जिस क्षेत्र से आते हैं, वहां की कई समस्याएं होती हैं, उन्हें ही वे यहां उठाने की कोशिश करते हैं। कई बार ऐसा होता है कि इस क्रम में जो सामान्य परम्पराएं होती हैं, उनका भी उल्लंघन मेम्बरान से हो जाता है। ऐसी परिस्थितियों को exception माना जाए, अपवाद माना जाए। मुझे उम्मीद है कि माननीय चेयरमैन साहब और माननीय उपसभापति जी दोनों बहुत अनुभवी हैं। आप मेम्बरों पर कभी नाराज़ मत होना। यदि मैम्बर नाराज़ हो जाएं तो आपका कुछ बिगाड़ नहीं सकते लेकिन आप नाराज़ हो जाएं तो मेम्बरान का बिगाड़ सकते हैं। इन शब्दों के साथ बहुत-बहुत धन्यवाद।

SHRI A. NAVANEETHAKRISHNAN (Tamil Nadu): Hon. Chairman, hon. Prime Minister, hon. Leader of the House–I am very happy to see him in good health–and other distinguished Members of this House. I extend my whole-hearted warm welcome and congratulations to the newly elected hon. Deputy Chairman, on my own behalf and on behalf of the AIADMK, Amma's party. Thank you, Sir.

MR. CHAIRMAN: Now, Shri Derek O'Brien.

SHRI DEREK O'BRIEN (West Bengal): Firstly, heartiest congratulations on behalf of all of us and, of course, from the Trinamool Congress to our new Deputy Chairman, Harivanshji. You are our neighbour in more ways than one. You come from a State which is our neighbour. For that, we are happy for you. You and I were neighbours, literally for one year sitting together here and what the people of this House do not know, you started your career with Ravivar and there also, we were neighbours because the magazine I used to work with, had its office literally in the same room with one partition there. So we go back a long way. Congratulations to you, and I think you are now sitting on the right side of the House literally. So please look after all of us. I think it was a good match. We started with cricket analogy. I am not going to fall into the trap of making smart puns, but since we got into the cricket analogy, it was a good match. Someone had to win, but both batsmen scored centuries. That is a very, very good thing. Our new Deputy Chairman can be assured, through you, Sir, that all of us will continue to cooperate as a constructive Opposition. We wish you good health and we wish you a fabulous tenure. Thank you very much.

MR. CHAIRMAN: Now, Shri Prasanna Acharya.

SHRI PRASANNA ACHARYA (Odisha): Sir, on behalf of my party and on behalf of all the hon. Members of my Party in Rajya Sabha, I also extend a hearty

[Shri Prasanna Acharya]
welcome to Harivanshji and congratulate him for being elected to this august Chair. Sir, four days back when I was talking to him, I was delighted to know that he also belonged to the same village, which just now the hon. Prime Minister was mentioning, where one of the great freedom fighters and revolutionary leaders of this country, Lok Nayak Jayaprakash Narayanji was born. He was saying that he was inspired by the ideology and inspiration of Jayaprakashji. Sir, as you know, during that time, a large number of young men and women of this country were inspired by the ideals of Lok Nayak Jayaprakashji and one among them is our hon. Deputy Chairman. I am very happy for that because I am one of the young men of those days who were also inspired by the movement of Lok Nayak Jayaprakashji. As the hon. Prime Minister and Arun Jaitleyji were saying, when the hon. Deputy Chairman is sitting on that side, his attention is directly towards the other side. But, Sir, when he will be sitting at the centre, we hope that his attention will be on those Members who are sitting at the centre and in-between. Most of the hon. Members belonging to the smaller parties have their seats here in the centre row and many times they complain that they are not being given due attention. So we hope that all those smaller parties will get equal attention from our hon. Deputy Chairman. With these words, I once again congratulate him and, at the same time, I also congratulate Shri B.K. Hariprasad, who is also associated with the politics of Odisha, my own State. He was the Observer of his party for Odisha for a long time and I also personally know him. He is a gentleman and a very knowledgeable person. I also thank him for maintaining the tradition and democracy of this House. इस सदन की जो परंपरा है, उसको भी maintain करने में उनका योगदान है। मैं उनको भी बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ, धन्यवाद।

श्री सभापतिः थैंक यू। श्री शरद पवार जी।

श्री शरद पवार (महाराष्ट्र): सभापति जी, मुझे खुशी है कि आज इस देश के एक पत्रकार सदन के उपसभापति पद पर विराजमान होने के लिए यहां हैं। मेरा उनसे कोई ज्यादा परिचय नहीं है, पर शायद उनको याद होगा कि 35 साल पहले चन्द्रशेखर जी मुझे लेकर इब्राहिम पट्टी गांव में गए थे। उन्होंने वहाँ पर एक अस्पताल बनाया था, तब श्री चन्द्रशेखर जी के साथ जो साथी थे, उनमें आज के उपसभापति जी भी थे। हम लोग तब मिले थे, हमें उसके बाद मिलने का मौका नहीं मिला। उनके इस सदन में आने की हमें खुशी थी, लेकिन सबसे बड़ी खुशी यह है कि आज उनको यहाँ निर्वाचित होने के लिए हम सभी का सहयोग मिला है। मैं उनसे कहना चाहता हूँ कि इस सदन की प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए हम लोगों का सहयोग उन्हें हमेशा मिलेगा।

सभापति महोदय, यह सदन राज्य सभा है, यह देश का अपर हाउस है। मैंने राज्य सरकार में काम किया है, राज्य की विधान सभा में काम किया है। मुझे याद है कि जब कभी राज्य विधान सभा में समस्या पैदा होती थी, तब ऐसे ही issue पर राज्य सभा में क्या कदम उठाए गए थे,

क्या निर्णय लिये गये थे, हमेशा उनका आधार लेकर राज्य सरकार अपना कारोबार करने की कोशिश करती थी। मुझे लगता है कि राज्य सभा का कारोबार करना, देश को और देश की सभी विधान सभाओं को एक दिशा देना, राज्यसभा का एक महत्वपूर्ण फर्ज है। मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि इस फर्ज़ को निभाने में आपको हमारा पूरा सहयोग होगा। इस सदन की गरिमा बनाए रखने के लिए हम हमेशा आपके साथ रहेंगे।

श्री राम चन्द्र प्रसाद सिंह (बिहार)ः सभापति महोदय, सबसे पहले मैं अपनी पार्टी के सांसद, आदरणीय श्री हरिवंश को बहुत-बहुत बधाई देना चाहता हूँ। साथ ही, मैं इस अवसर पर माननीय प्रधान मंत्री महोदय के प्रति आभार व्यक्त करना चाहता हूँ कि उन्होंने एनडीए की तरफ से इस पद के लिए श्री हरिवंश को सबसे उपयुक्त उम्मीदवार माना। उन्होंने हरिवंश जी के बारे में जिन बातों की चर्चा की, मुझे उन पर कुछ नहीं कहना है। प्रधान मंत्री महोदय ने सभी बातें कह दी हैं, लेकिन मैं आपके संज्ञान में दो तीन बातें और रखना चाहूँगा। हरिवंश जी की खासियत के बारे में सभी जानते हैं। मैं अपनी पार्टी का जनरल सेक्रेटरी हूँ, संगठन देखता हूँ। हरिवंश जी जरनल सेक्रेटरी रहे हैं। सर, हमारी पार्टी बहुत बड़ी पार्टी नहीं है, लेकिन मैं आपको बताना चाहता हूँ कि दिसम्बर के महीने में 25 दिनों तक, हमारे 25 हजार कार्यकर्ताओं को हरिवंश जी ने रोज़ डेढ़ घंटे लगातार महात्मा गाँधी, श्री लोहिया जी, श्री जयप्रकाश नारायण, डा. अम्बेडकर और श्री कर्पूरी ठाकुर के विचारों के बारे में बताया। श्री हरिवंश जी अब यहाँ पर ज्यादा समय देंगे, मुझे इसका नुकसान होगा।

सभापति महोदय, मैं अभी एक और बात की चर्चा करना चाहूँगा। आपने अभी चम्पारण की चर्चा की थी। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि चम्पारण में नील के अत्याचार को सभी जानते हैं, लेकिन उस समय चम्पारण के ऐग्रेरियन बिल पर इन्होंने बहुत ही seminal work, बहुत अच्छा काम किया। मैं और एक बात की चर्चा करना चाहता हूँ। आजकल बहुत लोग प्रयास करते रहते हैं कि मैं राज्य सभा में एमपी बनूं, लोक सभा में एमपी बनूं। सभापति महोदय, मैं अपनी पार्टी का जनरल सेक्रेटरी रहा हूँ, नीतीश बाबू के साथ वर्षों से रहा हूँ। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि श्री हरिवंश ने कभी भी चर्चा नहीं की कि मुझे राज्य सभा जाना है। वर्ष 2014 में जब हमारी पार्टी के तीन उम्मीदवारों का selection होना था, तब इन्होंने किसी से कुछ नहीं कहलवाया, कोई चर्चा ही नहीं की। इनको नीतीश बाबू ने खुद फोन किया कि हरिवंश जी, हम आपको राज्य सभा भेजना चाहते हैं, क्या आपको स्वीकार्य है? हम लोगों को बड़ी प्रसन्नता हुई कि हरिवंश जी हमारे साथ जुड़े। ये यहाँ पार्टी का काम भी करते थे, ये मेरे साथ उपनेता थे। जब भी किसी मुद्दे पर बात करनी होती थी, इसमें इनका भी योगदान रहता था। मैं संगठन के कारण ज्यादातर बिहार में रहता हूँ, अब मुझे थोड़ी परेशानी होगी। मैं आपको इतना जरूर आश्वस्त करना चाहता हूं कि इनका जो background है, ये जिस तरह से काम करते हैं और इनका जो temperament है, उससे ये उपसभापति के काम को बहुत ही दक्ष तरीके से निभाएंगे। मैं श्री हरिवंश को बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ।

SHRI Y. S. CHOWDARY (Andhra Pradesh): Mr. Chairman, Sir, I wholeheartedly congratulate Shri Harivanshji. On behalf of our party, I welcome him to be the Deputy Chairman of the House. Though I don't know much about his background

[Shri Y. S. Chowdary]

but, after hearing from others after having got elected as Deputy Chairman, I really appreciate his candidature. In a game, one has to lose and one has to win. This is the beauty of our Constitution and democratic process. Shri B.K. Hariprasad also got more than 100 votes for which I congratulate him also. Every Member would agree that in the last couple of months we have been under the 'strict' Chair, एक हेडमास्टर की तरह। We hope that Deputy Chairman Sahab will come and relieve you. ...(*Interruptions*)... That means we can have some relief. I welcome Shri Harivansh on behalf of Telugu Desam Party. Thank you.

DR. K. KESHAVA RAO (Andhra Pradesh): Mr. Chairman, Sir, first of all, I wholeheartedly congratulate my friend, Harivanshji. What is really significant is that in spite of a keen contest, there have been no tension, no bickering, and no pull or cross-talk; this is something which goes to the credit of both Harivanshji and also my friend, Shri Hariprasad. As a matter of fact, I should have been with him, which I am not. Sir, I only take one word from Shri Ghulam Nabi Azad, but this is important, not unlike what Mr. Chowdary said, the House deserves from him, needs from him some more time than given. The reason is simple and logical, the House being accountable, the Government of the day being accountable – accountable to whom – usually it is not the Ruling Party which asks for accountability, it is the opposition which asks for accountability. ...(*Interruptions*)...

MR. CHAIRMAN: That is being taken care of.

DR. K. KESHAVA RAO: So, we deserve a little more time than the others. That is the simple thing, Sir. Next thing is that I am really inspired not because I have been one of those who have been in the JP Movement, but having heard about you from the Prime Minister and also the JD (U) Leader, we really feel doubly satisfied. ...(*Interruptions*)...

श्री सभापतिः दर्शक गैलरी में जो बात कर रहे हैं, उनको समझाइए, नहीं तो respectfully उनको बाहर भेजिए, otherwise he will never get an opportunity to visit Parliament, tell him.

DR. K. KESHAVA RAO: So, I congratulate you, Harivanshji. But my last word would be, please don't give up your smile on the face which you always put, on, notwithstanding the tension in the House, your smile always would be inspiring us. Please do that and this is an answer to Mr. Chowdary also. Sir, thank you very much.

SHRI T. K. RANGARAJAN (Tamil Nadu): Sir, I congratulate Shri Harivanshji.

It is really a great day for this House. We had an election. We rushed from Chennai after attending the funeral of great Kalaignar to participate in this election. I think Hariprasadji should not lose his heart. It is part of our life. Everybody congratulates in this House our friend, Harivanshji for getting elected as Deputy Chairman. His tasks have been properly and eloquently explained by the Prime Minister. With sufficient knowledge on field, I think, he can understand our problem also. As correctly pointed out by many Members, normally the Chairman or Deputy Chairman looks at this side and that side, they ignore the 'middle' side. We always try to make our point. We are here only to participate in the discussion and debate. So, give proper opportunity to the weak section, though we are strong enough in our points. So, I once again congratulate our Deputy Chairman on behalf of our party. Thank you very much.

श्री सतीश चन्द्र मिश्रा (उत्तर प्रदेश): ऑनरेबल चेयरमैन सर, हम बहुजन समाज पार्टी की तरफ से श्री हरिवंश को बधाई देते हैं कि आज उनका चुनाव डिप्टी चेयरमैन पोस्ट के लिए हुआ है। हम लोगों को उनकी पृष्ठभूमि के बारे में बहुत कुछ मालूम नहीं था, लेकिन खास तौर से जब माननीय प्रधान मंत्री जी ने उनके बारे में बहुत-सी चीजें बताईं, तो आज मालूम हुआ है। उन बातों को जानने के बाद हमें यह लगता है कि जब आप इस कुर्सी पर बैठेंगे, तो जो बात राम चन्द्र प्रसाद सिंह जी ने अभी कही, उसको आप भूल जाएँगे कि आप उनकी पार्टी के हैं। अब आप किसी पार्टी के नहीं हैं, बल्कि आप इस सदन के हैं। अब आप उनकी पार्टी के नहीं रह गए हैं। थोड़ी देर पहले तक, जब चुनाव नहीं हुआ था, तब तक थे, लेकिन अब आप पूरे सदन के हो गए हैं। अब हम सब लोग आपकी सुरक्षा में यहाँ, इस सदन में रहेंगे और आप सबका ध्यान रखेंगे। उनके साथ-साथ खास तौर से मैं माननीय चेयरमैन साहब को बधाई देना चाहता हूं कि आपको सुबह से लेकर शाम तक कुर्सी पर बैठना पड़ता था, वह कष्ट हम लोग देखते थे और यह देख कर दर्द होता था और लगता था कि आपको जल्दी ही कोई सहयोगी मिल जाए। यह अच्छी बात है कि सदन समाप्त हो रहा है, लेकिन आपको एक बहुत ही अच्छे सहयोगी मिल गए, इस बात के लिए आपको भी हम बधाई देना चाहेंगे। श्री हरिप्रसाद जी को भी हम बधाई देना चाहेंगे, जैसा कि उधर से व इधर से सब लोगों ने कहा कि आप भी बहुत ही सक्षम व्यक्ति हैं और खास तौर से आपने भी सेंचुरी मारी है और हम सब लोग आपको यहां पर इतने वर्षों से देख रहे हैं, आपकी क्षमता को भी जानते हैं। अंत में मैं यह कहना चाहूंगा कि आप आज सदन में डिप्टी चेयरमैन हैं, तो हम लोग आपको पूरा सहयोग देने का काम करेंगे।

SHRI TIRUCHI SIVA (Tamil Nadu): Mr. Chairman, Sir, I rise to extend my heartiest wishes to the newly elected Deputy Chairman, Shri Harivansh. Not yet relieved from grief at the loss of our great Leader, we have come to perform our democratic duty. One of the lessons which he has taught us is, nothing should stand in our way when we perform our duties. Though he has passed away, though we are not relieved of the pain, we have come to do this because he would be pleased by this action. Sir, now I congratulate Shri Harivansh, a scholar, a journalist, who has been elected. He is going to occupy a very dignified position. Sir, I would like

[Shri Tiruchi Siva]
to quote only one couplet from Thirukkural. "Saman seiydhu seerthookkam kolpol amaind orupaal kodaamai charrork kani" [verse 118]* Like balance weighs just after balancing, unbiased to sides is the hallmark of the wise.

Sir, like the fixed scale that is inscribed in the chair, the Deputy Chairman or the Chairman, should not tilt on either side. They should be impartial and that is the ornament of the wise. That is what the great sage, Thiruvalluvar has said. Sir, we believe that – as far as the Chair is concerned – all Members here have got equal rights and privileges whether they sit in the front or on the right or on the left, wherever they may be, and your concern should be more about the backbenchers who never get an opportunity to participate in the debate. Sir, I should say that the coming days would be very productive. We have seen Shri Harivansh as a cool and a calm person and I wish, as a good friend, that the House would let him to remain the same when he is in the Chair also. Sir, he is going to assist you, like we, in the Panel of Vice-Chairmen do. He is the captain of a ship. He has to face storms and has to sail the ship safely and smoothly. A very big responsibility lies ahead of him. Sir, on behalf of the DMK party, again, we congratulate him and we expect very productive days in the coming years. Thank you.

श्री संजय राउत (महाराष्ट्र): चेयरमैन सर, मैं सबसे पहले अपनी पार्टी शिवसेना की तरफ से नवनिर्वाचित उपसभापति श्री हरिवंश जी को बधाई देता हूं। आज का दिन बहुत ही मंगलमय है। हमने जो आज़ादी की Quit India Movement शुरू की थी, उसकी 75वीं सालगिरह है। आज हमने सुबह हमारे सदन के नेता श्री अरुण जेटली जी को भी देखा कि वे स्वस्थ हैं और आज ही के दिन हम सबके मित्र हरिवंश जी, जो कल तक यहां बैठते थे, वे अब सदन के हो गए, वे निर्वाचित हुए हैं। सर, मैं यह मानता हूं, जैसा चौधरी जी ने कहा कि आप हेड मास्टर हैं और आपके ऊपर बहुत बोझ है, तो वह बोझ थोड़ा हल्का हुआ है और हमारा बोझ भी थोड़ा हल्का हुआ है। जब आप चेयर पर बैठते हैं, तो हमें लगता है कि हम प्रखर सूरज की किरणों में बैठे हुए हैं। अब यहां चन्द्रमा भी आ गया है। अब इस सदन में धूप और छांव का खेल शुरू हो गया है। जब आप अंदर जाएंगे, तो हम चन्द्रमा की छांव में काम करेंगे, हरिबाबू जी, आप पत्रकार रहे हैं, आपका गौरव है। इस सदन ने एक पत्रकार का गौरव बढ़ाया है, उसका मुझे आनंद है।

सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री रामदास अठावले): मैं भी पत्रकार हूं ...**(व्यवधान)**...

श्री संजय राउत: लिखना पड़ेगा, आप कवि हैं ...**(व्यवधान)**...

श्री सभापति: आपस में बात मत करिए। ...**(व्यवधान)**...

श्री संजय राउत: लोग मानते नहीं है कि मैं पत्रकार हूं, तो सामना तो अब होगा, लेकिन

*English translation of the original speech made in Tamil.

सामना ठीक तरह से होगा। आमना-सामना नहीं होगा। आपका मुंबई से भी रिश्ता है। आपने अपनी पत्रकारिता की शुरुआत मुंबई से की है। धर्मवीर भारती जी, जिन्हें हम हमेशा गुरु के स्थान पर मानते आए हैं, आपने उनके साथ काम किया था, तो मैं यह मानता हूं कि जो पत्रकार होता है, उसके लिए कोई काम कठिन नहीं होता है। जब आप चेयर पर बैठेंगे, तो मुझे पूरा विश्वास है कि आप पूरे सदन को साथ लेकर इसका नेतृत्व करेंगे। यह सदन, यह राज्य सभा, जो लोकतंत्र की गरिमा है, आप उसकी गरिमा को और तेजस्वी बनाएंगे। इस पद पर एक ऐसी हस्ती बैठ रही है, जिसको हमने चुना है। वह इतनी विनम्र है, इतनी सरल है, इतनी प्रामाणिक है। आपने लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी और चन्द्रशेखर जी के साथ बहुत ज्यादा समय बिताया है, तो आपको किसी भी प्रमाण-पत्र की जरूरत नहीं है। आपने अपनी यंग एज में लोकनायक जी और चन्द्रशेखर जी के साथ काम किया है, तो आप प्रामाणिक हैं, विनम्र हैं और मुझे पूरी आशा है कि हम सभी आपके साथ रहेंगे। जब आप उस चेयर पर बैठेंगे, तो हम लोग आपको सदन चलाने में पूरा सहयोग देंगे, मैं इतना ही कहूंगा। मैं एक बार फिर आपको बधाई देता हूं।

सरदार सुखदेव सिंह ढिंडसा (पंजाब): महोदय, मैं सबसे पहले हमारे साथी श्री हरिवंश को बहुत-बहुत बधाई देना चाहता हूं। मुझसे पहले माननीय प्रधान मंत्री जी, लीडर ऑफ दि हाउस, लीडर ऑफ दि अपोज़िशन और दूसरे नेताओं ने भी इनकी बात कही है, क्योंकि इनका रिश्ता ऐसे दो महान नेताओं श्री जयप्रकाश नारायण जी और चन्द्रशेखर जी के साथ रहा है, जिन्होंने देश की राजनीति को एक नई दिशा दी थी, इन्होंने उनके साथ काम किया है। मैं समझता हूं कि उनके साथ काम करने बाद कोई भी ऐसा इंसान नहीं हो सकता है, जो किसी के साथ पक्षपात करे। मैं समझता हूं कि ये रीजनल पार्टी की तरफ से आए हैं, नीतीश जी हमारे दोस्त हैं, उनकी पार्टी के हैं, सरदार प्रकाश सिंह बादल और श्री नीतीश जी का बहुत पुराना रिश्ता है। मैं अपनी पार्टी की तरफ से दोबारा इनको बहुत-बहुत बधाई देता हूं। मैं हरिवंश जी से एक बात जरूर कहना चाहूंगा, जैसा लीडर ऑफ दि हाउस ने कहा कि रीजनल पार्टी और छोटी पार्टी को टाइम नहीं मिलता है, क्योंकि मेम्बर कम होते हैं, तो आप जब कुर्सी पर बैठे, तो आप यह जरुर ध्यान रखें कि आप उनके लिए खास टाइम दें, क्योंकि उनको वक्त नहीं मिलता है और जब मिलता है तो उनको दो-तीन मिनट के बाद बैठने के लिए बोल देते हैं। इसलिए मेरी आपसे यह रिक्वेस्ट है कि आप जब भी कुर्सी पर बैठे, तो उनका ध्यान जरूर रखें। यह पहली दफ़ा है कि रीजनल पार्टी के डिप्टी चेयरमेन आए हैं, ये हमारा जरूर ध्यान रखेंगे।

SHRI V. VIJAYASAI REDDY (Andhra Pradesh): Mr. Chairman, Sir, on behalf of my party, the YSR (Congress) Party, and on behalf of the President of my party, Shri Y.S. Jaganmohan Reddy, I wholeheartedly congratulate Harivansh*ji* on being elected as the Deputy Chairman of Rajya Sabha.

We all have been seeing for the last four years his dedication and commitment as a Member of this august House. He is a renowned and veteran journalist. As a journalist, he has an experience of forty years. He has been associated with the *Anand Bazar Patrika* and the *Prabhat Khabar*. His diverse experience would immensely be useful to all of us. I am very confident that his services, as the Deputy Chairman of this House, would be very, very helpful. Thank you very much, Sir.

SHRI D. RAJA (Tamil Nadu): Sir, on behalf of my party, the CPI, I congratulate Shri Harivansh*ji*.

I have been seeing that he is one of the very learned Members of our House. I used to listen to him very keenly whenever he would get up and speak on the floor of this House. During his last speech, he quoted something from a book. Then, I asked him as to what he had quoted. He wrote the name of that book and gave that to me. I went to Chennai and got that book. The title of that book was 'The Billionaire Raj'. He is such a person. He always used to speak with great commitment to the point he believed in. Today, he has been elected as the Deputy Chairman. I wish him all success. I must assure him that our party will give him full cooperation.

Sir, the hon. LoP has said that he is a great lover of Hindi language. I think, his love for Hindi would lead him to love for all Indian languages. For instance, my good friend Shri Hariprasad spoke the other day. He represents Tulu. Tulu is one of the Indian languages. Mr. Chairman, Sir, you have introduced all the 22 languages to be used in the House. ...(*Interruptions*)...

Shri Harivansh*ji* understands the functions of this House and the compulsions and commitments of Members from all sides. It is the Council of States. I hope he will uphold the dignity of this House. He will see to it that the House performs and the concerns of the Members are respected, given due importance.

Lastly, the hon. Prime Minister is sitting here. He rightly referred to the Quit India Movement. On 8th of August, the British Police went to arrest Mahatama Gandhi. Mahatam Gandhiji asked the British Police to wait for a few minutes as he wanted to collect some of his personal belongings. He went inside and came back after some time with the Geeta, the Bible and the Quran in his hand. These were the things which Gandhiji went inside to collect. Even at that time, Gandhiji had the spirit of secular democracy.

I, once again, congratulate Harivansh*ji*. I hope, he will uphold such values. With these words, I greet him and congratulate him. Thank you very much.

SHRI D. KUPENDRA REDDY (Karnataka): Sir, on behalf of my party, I congratulate Harivansh*ji*. Thank you very much.

डा. सोनल मानसिंह (नाम निर्देशित)ः सभापति महोदय, यह मेरी मेडन स्पीच नहीं है, यह मात्र हम जो मनोनीत सदस्य आए हैं, उनके द्वारा श्री हरिवंश को बहुत-बहुत अभिनंदन देने के लिए मैं खड़ी हुई हूं। आपका नाम सार्थक है, क्योंकि "हरि तुम हरो जन की पीर" यह मीरा बाई का पद है, तो "हरि तुम हरो सदन की पीर"। नमस्कार।

श्री अमर सिंह (उत्तर प्रदेश): सभापति महोदय, मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा। मुझे आज चन्द्रशेखर जी बहुत याद आ रहे हैं। कोई व्यक्ति अपनी दृढ़ता, विश्वास और संयम से हमारे बीच में नहीं रह कर भी कैसे रहता है, उसका ज्वलंत प्रमाण हरिवंश जी स्वयं हैं। आज शरद जी हों, मैं हूं, हरिवंश जी हों, यहां तक कि माननीय प्रधान मंत्री जी ने भी चन्द्रशेखर जी का संदर्भ दिया। मैं समझता हूं कि चन्द्रशेखर जी की सबसे बड़ी विशेषता थी, उनके पास दल नहीं था, लेकिन उनका व्यक्तित्व इतना प्रखर था कि चाहे आदरणीय भैरों सिंह शेखावत हों या शरद जी हों या हमारे जैसे छोटे लोग हों, वे सभी लोग उनमें समाहित थे। हरिवंश जी को बहुत निकट से चन्द्रशेखर जी के कारण जानने का अवसर मिला। धर्मवीर भारती जी की चर्चा हुई। धर्मवीर भारती जी सबसे निकट हरिवंश राय बच्चन जी के थे, उनके परिवार के लोग भी इस सदन में हैं। चन्द्रशेखर जी के सुपुत्र भी इस सदन में हैं, तो इस सदन में वही चरित्र हैं, जो किसी न किसी रूप से हरिवंश राय जी, चन्द्रशेखर जी से जुड़े हुए लोग हैं। ऐसा लगता है कि कोई अपना आज पद पर सुशोभित हुआ है, जिसको इधर का, मध्य का, दाएं का, बाएं। का, हर ओर का समर्थन है। मैं उनको बहुत-बहुत हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

श्री बिश्वजीत दैमारी (असम): सर, हरिवंश जी को बधाई देने के लिए कोई शब्द बाकी नहीं रह गया है। सारे हाउस और मेरी पार्टी की तरफ से भी मैं उनको बधाई देता हूं। मैं सिर्फ एक ही बात रखना चाहता हूं कि इस हाउस में जितने भी सदस्य हैं, वे सभी राज्यों से आते हैं, देश के कोने-कोने से आते हैं और वे बहुत से इलाकों का, बहुत से समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं। सभापति महोदय, मुझे लगता है कि यहां एक चीज की कमी है और वह यह है कि यहां पर बड़ी पार्टियां ही अपनी बातों को अच्छी तरह से समझा सकती हैं। जो छोटी-छोटी पार्टियां हैं, उनके प्रतिनिधियों को बोलने के लिए दो-तीन मिनट का समय मिलता है, जिसके कारण वे इस देश की बहुत सारी बातों की जानकारी देने में सक्षम नहीं हो पाते हैं। आपसे मेरा अनुरोध है कि जब भी आप चेयर पर बैठे, तो जो छोटी-छोटी पार्टियां हैं और जो एक-एक प्रतिनिधि पिछड़े इलाकों से आते हैं, उनको आप 10-15 मिनट बोलने का मौका दें, जिससे कि सारे देश को हर तरह की समस्या के बारे में अच्छी तरह से पता चल सके और सरकार अच्छी तरह से उनको सुलझाने के लिए पॉलिसी बना सके, धन्यवाद।

श्री सभापतिः रामदास जी। देखिए, आपका कितना समर्थन है।

श्री रामदास अठावलेः चैयरमेन सर, आर.पी.आई. की तरफ से हरिवंश जी को मैं देता हूं शुभेच्छा।

"हरिवंश को आर.पी.आई. की तरफ से मैं देता हूं शुभेच्छा,
और हाउस को अच्छा चलाओ, यही है मेरी इच्छा।
मैं हमेशा करता रहूंगा उनका पीछा,
इसलिए मैं दे रहा हूं आपको शुभेच्छा।
मोदी जी ने हरिवंश जी को दे दिया है मौका,
लेकिन हरिप्रसाद को कांग्रेस ने दे दिया है*।
इस चुनाव में दोनों ही थे हरि,
हार गया प्रसाद हरि, चुनकर आ गया वंश हरि।"

*Expunged as ordered by the Chair.

श्री सभापतिः यह कविता नहीं है, समस्या है, आप विषय पर आकर अभिनंदन करिए।

श्री रामदास अठावलेः हरिवंश जी, आप उधर चले गए हैं। हमें डर इस बात का है कि आप कब उधर जाएंगे, कब इधर आएंगे, उसका पता नहीं है, लेकिन आज आप हमारे साथ हैं और यह हमारे लिए बहुत बड़ी खुशी की बात है कि आप एक पत्रकार हैं, आप एक राजनेता भी हैं, सोशल वर्कर भी हैं और इस हाउस को चलाने के लिए आपको मौका दे दिया है। मैं हमेशा चेयरमैन साहब से डरता हूं।

"मैं चेयरमैन साहब से डरता हूं,
इसीलिए आपका समर्थन करता हूं।"

मैं आपको भारत की अम्बेडकर जनता की ओर से, रिपब्लिकन पार्टी की ओर से, दलित समाज की ओर से हार्दिक बधाई देता हूं और आप हाउस अच्छी तरह से चलाओ।

"आप उधर चले गए, लेकिन ज्यादा इधर देखो।
थोड़ा-थोड़ा उधर देखो और कम बीच में देखो।"

एक बार फिर से मैं आपको शुभेच्छा देता हूं, बधाई देता हूं।

MR. CHAIRMAN: Honourable Members, election by this august House of its Deputy Chairman is an important event of this Session. Deputy Chairman has an important role in sharing the responsibility of presiding over the proceedings of the House for a considerable period every day.

I heartily congratulate Shri Harivansh*ji* on his election as Deputy Chairman of this august House today. It is an honour conferred on him by this august House.

I have reasons to believe strongly that he would live up to the expectations of all sections of the House. I say so based on my interactions with him during the last one year as Member of Parliament and even earlier also as a journalist.

I have noticed Shri Harivanshji making constructive suggestions in the meetings of the Business Advisory Committee and also my daily meetings with leaders of various parties. On all such occasions, his suggestions and interventions were very clearly driven by his commitment to enable smooth functioning of the House.

If some of you find me being emotional at times about functioning of the House, I can assure you that Shri Harivansh is calm, cool and smiling all the time. These traits should help Shri Harivanshji in discharging his new responsibility as a Deputy Chairman of this august House effectively.

I understand that he hails from a village in Uttar Pradesh bordering Bihar which also gave birth to one of the great leaders of our country, late Shri Jayaprakash

Narayan*ji* from whom all of us, including me, have taken inspiration. He resides in Jharkhand and is a Member of this House from Bihar. So, U.P., Jharkhand and Bihar – all three in one! This kind of association with three States of our country would certainly give anybody a true Pan-Indian perspective.

As Deputy Chairman of Rajya Sabha, Shri Harivansh*ji* has a commonality with the Chairman who hails from Andhra Pradesh, resides in Telangana, got elected from Karnataka and finally, after election from Rajasthan, came to this position.

Among the few firsts that I have seen of this House during the last one year, Shri Harivnash*ji* is the first to become Deputy Chairman of this House as a first-time Member. This is indeed an honour. I compliment him for the same.

Like me, Shri Harivash*ji* also did his schooling in a Government school. He took his graduation from Banaras Hindu University.

I have read somewhere one of his teachers saying that Shri Harivansh was a keen student and used to talk less normally but pitched in with very logical and convincing perspectives during debates. That should help him in his new assignment.

Shri Harivansh*ji* also worked as a journalist of repute in major media organizations. He was an editor of Prabhat Khabar. The hon. Prime Minister was mentioning that when he joined this newspaper, the circulation was only four hundreds. I can share with you that when he led the newspaper as Editor, it had reached to almost 10 lakh circulation. That speaks of his capacity. I hope this experience would help this august House find more goodwill from the media. As said, he gave up the comfortable job in a nationalized bank to get back to journalism again. This shows that he goes by his heart in pursuit of larger convictions and commitments. Shri Harivash also has experience of the governance system because he has been Advisor to the former Prime Minister, Shri Chandrashekhar*ji*. I am also happy that this House could elect its Deputy Chairman during the Session immediately after the vacancy arose. I compliment all sections of the House for this, and this should be the way. I also compliment senior Member of this august House, Shri B.K. Hariprasad, whom I have known for years, for contesting this election in the spirit of democracy. After the contest we all move forward with a spirit of friendship and cooperation. The entire election went off in a smooth and dignified manner. So, I compliment not only both the candidates, but also all the Members from various political parties, who behaved in a dignified manner. Even as I am sure, I still formally urge upon all sections of the House to extend full cooperation to the new Deputy Chairman, as has been the case in the past.

[Mr. Chairman]

Friends, there were suggestions from various sides saying 'you look left', 'you look right'. I can tell him, as the Chairman, that we should neither look left nor right; we should always be straight about the Rules and take care of everybody in the House. Whether they are sitting here, there or sitting in front of you, you have to be guided by certain guidelines and precedents that have been set in the House by taking care of the smaller parties as well. We should also see to it that everybody gets their due. This is only my advice to him.

Some Members were also suggesting that there could be some exceptions where there would be emotion and commotion. If it is an exception, I have no problem, but exception should not become the rule. Please understand that. All these regulations of the Chair, trying to see to the smooth conduct of the House, is in accordance with the system. That is what democracy is. If everybody starts speaking at the same time, you cannot call it democracy. Keeping that in mind everybody must cooperate. As I said in the beginning itself, my operation depends on your cooperation. The Deputy Chairman also, I am sure, will go by, first, the rules and regulations, second, by the aspirations of the people and, thirdly, the precedents set by various Presiding Officers of this august House. I once again, on behalf of all, compliment him. Let everybody know that his name is not Harivansh Rai. He is Shri Harivansh Narayan Singh. But taking the spirit of Shri Jaiprakash Narayan, and influenced by his thoughts, subsequently, he voluntarily gave up the surname 'Narayan Singh' and applied to the Gazette, got the permission of the District Magistrate for the same. Even here, in the Parliament, he conveyed to the Parliament Secretariat in the beginning itself that he doesn't want to be known by any surname. So, that means that he has got a commitment of not being associated with one community here and there, and that speaks about his character. So, he has the character, calibre, capacity and conduct. Let us all hope for a better functioning of the House.

Thank you very much. Now, the Deputy Chairman may thank the Members for the support they have extended to him.

श्री उपसभापति (श्री हरिवंश): माननीय सभापति जी, आप में से एक-एक व्यक्ति के प्रति कृतज्ञता और आभार के साथ, सबसे पहले मैं माननीय प्रधान मंत्री जी, नेता सदन, नेता प्रतिपक्ष समेत हर दल के एक-एक नेता और इस सदन के एक-एक सदस्य के प्रति अपना आभार व्यक्त करना चाहूंगा।

महोदय, मुझे पता है कि इस गौरवशाली सदन का महत्वपूर्ण जिम्मा आपने मुझे सौंपा है और आप में से कुछेक लोगों ने कहा कि मुझे जो दायित्व आपने दिया है, उसके अनुसार अब मैं किसी दल और पक्ष का नहीं, उसका निर्वाह मैं इस सदन के आचरण के अनुसार करूंगा, लेकिन उससे पहले मैं जिन लोगों ने मेरे ऊपर इस पद के लिए भरोसा किया, चुना, जिस दल ने मुझे

यहां आने का अवसर दिया, संसदीय कार्य केन्द्रीय व राज्य मंत्री समेत, राज्य सभा सचिवालय के सभी लोगों के प्रति अपना आभार व्यक्त करना चाहूंगा।

महोदय, खास तौर से सदन के नेता, अरुण जेटली जी आए। मैं उनके जल्द स्वस्थ होने और यहां शीघ्र लौटने की कामना करता हूं। आप में जिन-जिन लोगों ने मेरे बारे में जो-जो कहा, उसके लिए हिन्दी में मेरे पास एक शब्द है कि मैं उनके प्रति "भाव विह्वल" हूं। अंग्रेजी में इसे कहते हैं "I am moved."

महोदय, मैं आपकी अनुमति से बहुत संक्षेप में कुछ चीजें कहना चाहूंगा। इस चेयर पर चयन के बाद, जिन लोगों ने जितने शब्द कहे, उसी मर्यादा के तहत मैं कहना चाहूंगा मैं उस गांव का हूं, जो दो नदियों-गंगा और घाघरा के बीच बसा है। पेड़ के नीचे पढ़ाई कर, एक मामूली प्राइमरी स्कूल से शुरू कर, उस परिवेश में, जहाँ जब बाढ़ आती थी, तो लगता था कि यह जीवन की अंतिम रात या अंतिम दिन है। सभापति जी, मैं उस परिवेश से निकला हूं। कभी, जिसे हम आभिजात्यों का शहर, लुटियंस दिल्ली या इलीट क्लास की दिल्ली कहते थे, वहाँ हम इस स्थान पर पहुंच जाएंगे, इसकी कल्पना नहीं की थी, परंतु यह आप में से उपस्थित एक-एक व्यक्ति के कारण संभव हुआ है। जिन लोगों ने मुझे इसका अवसर उपलब्ध कराया है, मैं उनके प्रति पुनः कृतज्ञता व्यक्त करता हूं।

सभापति जी, हमारी सामाजिक चेतना की बुनियाद कब पड़ी? मैंने बताया है कि जिस गाँव के हम सब हैं, उसमें आने-जाने का रास्ता नहीं होता था। जब बाढ़ आती थी, तो हम अपने-अपने घरों में लगभग कैद हो जाते थे। हमने समुद्र बहुत बाद में देखा, पर जब कभी बाढ़ का प्रवाह देखते थे, तो लगता था कि समुद्र यही है। देश की दो ताकतवर नदियाँ गंगा और घाघरा हैं। वहाँ के लोग लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी के पास गए, वह उसी गांव में जन्मे और कहा कि, "आपका इतना बड़ा नाम है, आपका यश इतना बड़ा है, आप किसी से कहें तो इस गाँव में आने-जाने के लिए सड़क होगी, आप किसी से कहें, तो बुनियादी सुविधाएँ होंगी, आप किसी से कहें तो – बहुत लोग यह नहीं जानते कि जिसे हम खाट कहते हैं, हमारी तरफ उस पर लोग सोते हैं, पर जब कोई बीमार पड़ता था, तो लोग उस चारपाई पर बीमार व्यक्ति को रखकर पंद्रह-पंद्रह किलोमीटर दूर तक पैदल ले जाया करते थे। हमने बिजली की रोशनी बहुत बरसों बाद देखी कि होती क्या है। हम सबने दीये की रोशनी में अपना जीवन शुरू किया। जब लोग जे.पी. नारायण के पास ये परेशानियाँ लेकर गए, तो जे.पी. नारायण जी का जो जवाब था, वह आज तक मेरी स्मृति में है। उन्होंने लोगों से कहा, "कि जरूर, मुझे लोग जानते हैं, मैं कह सकता हूं, पर अगर मैं कह दूं और मेरे ही गाँव में काम हो, तो देश के साढे पाँच लाख गाँव मेरे हैं। अगर उनमें काम न हो, मेरे गाँव में काम हो, तो मैं खुद को क्या जवाब दूंगा?" यह मर्यादा और इस मर्यादा पर राजनीति के माहौल में हमारी पीढ़ी के हज़ारों लोगों की तरह मेरा भी मानस बना।

सभापति जी, मैंने लगभग चालीस वर्षों तक नौकरी है। मैंने सैंतीस वर्षों तक पत्रकारिता की और आपने सुना भी कि हमारे कई अज़ीज मित्रों ने डा. धर्मवीर भारती से लेकर, एस.पी.सिंह, उदयन शर्मा जैसे बड़े नामों का उल्लेख किया है, पर आज, जब मैं चयन के बाद आपके सामने खड़ा हूं, तो मेरे अंदर दो वर्षों से जो यक्ष प्रश्न चल रहा है, वह आपसे शेयर करना चाहता हूं।

[श्री उपसभापति]
यह मैं इसलिए भी करना चाहता हूं कि जिन लोगों को अपने युवा दिनों से, जिनकी प्रखरता, संसदीय अनुभव और जिनकी राजनीतिक समझ का मैं कायल रहा हूं, वे चाहे किसी भी दल में हों, उनमें नेता प्रतिपक्ष से लेकर सामने बैठे सारे लोग हैं, मैं उनसे यह कहना चाहता हूं कि पिछले दो वर्षों से सांसद बनने के बाद मेरे मन के अंदर जो सवाल गूंजता रहा, उसको आपके सामने रखना चाहूंगा। युधिष्ठिर और यक्ष का जो संवाद हुआ था, कुछ उसी तरह का सवाल आपके सामने रखना चाहता हूं। 2014 में सांसद बनने के बाद बाबू कुँवर सिंह, जिन्होंने 1857 की लड़ाई में, वृद्ध होने के बावजूद आज़ादी के लिए बहुत कुछ किया, मैं उनकी धरती आरा में एक कॉलेज में बोलने के लिए गया था, पर वह बात मैं रखूं, इससे पहले मैं आपको बताना चाहूंगा कि वह बात रखने के लिए मैं प्रेरित कहाँ से हुआ। तमिल के महाकवि तिरुवल्लुवुर, जिनका अभी उल्लेख हुआ है, उनकी जो मशहूर किताब है, उसमें प्रसंग है, जिसका हिंदी अनुवाद हैः–

"शत्रु मध्य मरते निडर, मिलते सुलभ अनेक,
सभा मध्य भाषण निडर, करते दुर्लभ एक।"

अर्थात् "Many encountering death in the face of foe will hold their ground; who speak undaunted in the council hall are rarely found. Many indeed may fearlessly die in the presence of their foes; but few are those who are fearless in the assembly of the learned." मेरी दृष्टि से आप सभी लोग बड़े अनुभवी और जानकार लोग हैं, इसलिए मैं अपना यह यक्ष प्रश्न आपके सामने रख रहा हूं। एक युवक ने मेरी बात के बाद पूछा कि हमने Westminster model, लोकतंत्र का पश्चिमी मॉडल अपनाया है, तो पूरा मॉडल, उसने उदाहरण के साथ कहा, ब्रिटेन में हो, ऑस्ट्रेलिया में हो, अमरीका में हो, डिसिप्लिन डेकोरम, प्रोसीज़र, डिसेंसी और डिग्निटी से चलता है। उन्होंने कहा कि आप लोग भी संसद को ऐसे चलाने की कोशिश करें। अगर नहीं चल रही तो उसके क्यों और क्या कारण हैं, वे आप हमें बताएं। एक दूसरे सज्जन ने कहा कि एक तो यह वेस्टर्न परंपरा है, जिसको हमने अपनाया है। और लोकतंत्र से अच्छी कोई व्यवस्था नहीं, जिसमें हम सबका यकीन है। पर उन्होंने कहा कि अपने यहाँ शास्त्रार्थ की पुरानी परंपरा भी थी, उसके बड़े मानक तय थे और हजारों वर्ष पहले अपने यहाँ ईसा सदी की शुरुआत में जैन धर्म से लेकर बाकी जगह इसके references मिलते हैं। जैसे बौद्ध पीठ आयोजन हुआ, Buddhist Conference, जिसमें त्रिपिटक की रचना हुई, जहाँ लिच्छवियों की परंपरा थी, जहाँ जनक के दरबार में अष्टावक्र अकेले अपनी बात कहने गए, जहाँ शंकराचार्य ने घूम-घूम कर देश में शास्त्रार्थ किया, जो पुराना डिबेट और संवाद का बड़ा स्तर था, क्या आप लोग उसको भी याद रखते हैं? दरअसल इन दोनों सवालों को मैंने यक्ष सवाल के रूप में माना। फिर उन्होंने कहा कि अगर आप सिर्फ गीता को धर्म ग्रंथ के रूप में नहीं, महज़ उसका एक सूक्त याद रखें, तो शायद बहुत रास्ता निकल जाए। इसमें एक जगह अर्जुन को कृष्ण कहते हैं,

"यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।"

"For whatever a great man does, that very thing other men also do. Whatever standard he sets up, the generality of men follow the same." यहाँ जो आप सब लोग

बैठे हैं, उनकी राह लोग देखते हैं, उसी की रहनुमाई करते हैं। मैं ईमानदारी से आपको कहूँ, तो इन दोनों सवालों का जो जवाब मुझे मिला, वह मैं आपसे शेयर करना चाहता हूँ। हम गाँधी जी की 150वीं जयंती मना रहे थे। जब मैं गाँधी जी के बारे में पढ़ रहा था, तो मैंने पाया कि उन्होंने हरेक राजनीतिक कार्यकर्ता के लिए, चाहे वह किसी दल में हो, किसी काम में लगा हो, एक सूक्त दिया, जिसमें 10 या 12 प्वाइंट्स हैं, कि हम किस तरह संवाद करें, किस तरह रहें, किस तरह का आचरण करें। मुझे उम्मीद है कि हम सब मिल कर उस रास्ते पर चलेंगे, क्योंकि हम गाँधी जी की 150वीं जयंती का आयोजन कर रहे हैं, तो हमें जरूर कामयाबी मिलेगी। यह देश अलग-अलग संस्कृतियों का है, अलग-अलग पृष्ठभूमियों का है, अलग-अलग विचारों का है। उन सबके मध्य से हमें रास्ता निकालना है। स्वाभाविक है कि सदन में अलग-अलग ढंग से सोचने वाले लोग होंगे, पर हमारे संविधान बनाने वालों ने भी इसका ध्यान रखा और इस पर बहस की।

सर, मैं सिर्फ दो उदाहरण quote करके अपनी बात समय के अन्दर खत्म करूंगा। 13 मई, 1952 को राज्य सभा का गठन क्यों हुआ, इस पर डा. राधाकृष्णन ने कहा, "So far as its deliberative functions are concerned, it will be open to us to make very valuable contributions, and it will depend on our work whether we justify this two chamber system, which is now an integral part of our Constitution. So, it is a test to which we are submitted... We should try to do everything in our power to justify to the public of this country that a second Chamber is essential to prevent hasty legislation." दूसरी बात, अनंतशयनम आयंगर जी ने इस हाउस की जरूरत क्यों है, इस पर कही, "The most that we expect the Second Chamber to do is perhaps to hold dignified debates on important issues... I think, on the whole, the balance of consideration is in favour of having such a Chamber and taking care to see that it does not prove a clog either to legislation or administration." जो rules and procedure हमारे संविधान निर्माताओं ने बनाए, उससे हम मिल कर देश को महान बना सकते हैं। डिबेट में differences होंगे, opinion में differences होंगे, लेकिन हम सब मिल कर उसका रास्ता निकालेंगे।

सर, अन्तिम बात, मैं बिल्कुल पहली opportunity में कहूँगा कि मुझे आप सबके सौजन्य से यह मौका मिला, तो गोरे मुराहरी जी ने जब यह पद सँभाला, तो उन्होंने कहा था कि मुझे डर लग रहा है, वही हालत मेरी है, क्योंकि मैं इतने अनुभवी लोगों को, जिनका संसदीय जीवन इतने अनुभवों से भरा है, उनको देख रहा हूँ, पर यही मेरी ताकत भी है। ताकत है कि आप सब लोग रास्ता बताएँगे, rules and procedure हम मिल कर कैसे आगे बढ़ाएँ। आप साथ हैं, मैं यकीन दिलाता हूँ कि हम सब मिल कर सदन को बेहतर से बेहतर चलाने की कोशिश करेंगे। मुझसे आपकी जो भी अपेक्षा हो कि बेहतर तरीके से, बिल्कुल मर्यादित तरीके से, निष्पक्ष होकर सदन चलाने में मैं जो कर सकता हूँ, उसमें मैं आपके सहयोग का स्वागत करूंगा, आपके सुझावों का स्वागत करूंगा। मैं उसी रास्ते सदन को चलाने की पूरी कोशिश करूंगा। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री सभापतिः धन्यवाद। Hon. Members, tomorrow morning at nine o'clock, the Chairman of the Rajya Sabha, myself, I am hosting a breakfast for the newly elected Deputy Chairman as well as newly elected Members and others also. It is to be

[श्री सभापति]

held in Parliament House Annexe. You might have already got the invitation. Please do attend. You will be getting the South-Indian type of breakfast also. Now, I invite the Deputy Chairman to come and preside over the House

(MR. DEPUTY CHAIRMAN *in the Chair*)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The House stands adjourned to meet at 2.00 p.m.

The House then adjourned for lunch at one of the clock.

The House reassembled after lunch at two of the clock,
MR. CHAIRMAN *in the Chair.*

WRITTEN ANSWERS TO STARRED QUESTIONS

Reimbursement of arrears for revised UGC pay scales

*241. SHRI D. KUPENDRA REDDY: Will the Minister of HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT be pleased to state:

(a) whether the Central Government has not reimbursed the arrears arising out of the implementation of 2006 revised UGC pay scales for the university and college teachers to various States including Karnataka;

(b) if so, the details thereof;

(c) whether the Central Government has taken any action for expediting the release of the said arrears to the States;

(d) if so, the details thereof and by when these funds would be released; and

(e) if not, the reasons therefor?

THE MINISTER OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT (SHRI PRAKASH JAVADEKAR): (a) to (e) Under the Scheme of Revision of Pay (6th CPC) of Teachers and Equivalent Cadres in Universities and Colleges, the Central Government had committed to reimburse 80% of the total financial burden accrued for the period from 01.01.2006 to 31.03.2010 due to implementation of revised pay scales to teachers of State Universities and colleges to the State Governments subject to the condition that the entire Scheme of revision of pay scales, together with all the conditions to be laid down by the UGC by way of Regulations and other guidelines shall be implemented by State Governments and Universities and Colleges coming under their jurisdiction as a composite scheme, by making necessary amendments in statutes, ordinances, rules, etc. of the State Universities.